ISSN: 2582-7162

शोध

स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शन एवं उनके शैक्षिक विचारों का भारतीय शिक्षा प्रणाली में योगदान

सुनेहरी बाई [1], संजू झाँ[2]

[1]शोधकर्मी, महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर
[2]शोध–निर्देशक, महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर

Corresponding author: सुनेहरी बाई, महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर
Email: dr.vsy10@gmail.com

प्रस्तावना

शिक्षा प्रत्येक राष्ट्र एवं व्यक्ति की आवश्यकता है। शिक्षा के द्वारा यदि व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का विकास करता है, व्यवहार में सुधार करता है, तो राष्ट्र इसके द्वारा अपने आदर्शो को प्राप्त करता है, अपनी आवश्यकताओं को पूरा करता है, तथा राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान करता है। व्यक्ति एवं समाज के लिए आवश्यक एवं अपरिहार्य इस शिक्षा के कई आधार हैं जैसे–सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक तथा दार्शनिक आदि। शिक्षा के दार्शनिक आधार का अर्थ है, कि शिक्षा दर्शन पर आधारित होनी चाहिए। दूसरे शब्दों में शिक्षा के उद्देश्य, उसका पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, अध्यापक, छात्र, अनुशासन तथा विद्यालय प्रशासन सम्बन्धी विभिन्न दृष्टिकोण उस दार्शनिक विचारधारा के अनुरूप होने चाहिए जिसे उस समाज ने मान्यता प्रदान की है। वास्तव में दार्शनिक आधार ही शिक्षा का मुख्य आधार है क्योंकि दर्शन ही व्यक्ति एवं समाज के लिए जीवन मूल्यों, आदर्शो, पाठ्यक्रम इत्यादि निर्धारित होते हैं। स्पष्ट है कि शिक्षा एवं दर्शन एक–दूसरे से घनिष्ट रूप से सम्बन्धित हैं। इस सम्बन्ध के विषय में विस्तृत रूप से जानने से पूर्व यह जानना आवश्क है कि शिक्षा और दर्शन वास्तव में क्या है ? शिक्षा ही वह उपादान है, जो मनुष्य के बौद्धिक स्तर को बढ़ाकर उसके जीवन को सुखद बनाता है। शिक्षा बिना मानव जीवन पंगु है। जिस मनुष्य के पास जैसी शिक्षा होगी, उसकी बुद्धि वैसी ही होगी।

मुख्य शब्द : शैक्षिक, दर्शन, शैक्षिक विचारों, शिक्षा प्रणाली, योगदान

SDES- International Journal of Interdisciplinary Research is a journal of Open access. In this journal, we allow all types of articles to be distributed freely and accessible under the terms of the creative common attribution- non commercial-share. This allows the authors, readers and all scholars and general community to understand, use and to develop non-commercially work, as long as appropriate credit is given and the newly developed work are licensed with similar terms.

How to cite this article: बाई सुनेहरी बाई, संजू झाँ सं. स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शन एवं उनके शैक्षिक विचारों का भारतीय शिक्षा प्रणाली में योगदान SDES-IJIR; 2023; 4-6: 720-724
Submitted: 20-December-2023; **Accepted:** 28-December-2023; **Published:** 8-January-2024

परिचय

शिक्षा द्वारा मनुष्य अपना विकास तो करता ही है, साथ में समाज का विकास भी करता है। विश्व–विख्यात आध्यात्मिक विभूति विवेकानंद ने अपने ओजस्वी विचारों और दूरदृष्टि से समाज में नई चेतना जाग्रत् की, उसे एक नई दिशा दी। आज की पहली आवश्यकता है, कि स्वामी विवेकानंद के जीवन–दर्शन से हम शिक्षा प्राप्त करें। यह पुस्तक उसी उद्देश्य की पूर्ति करती है। स्वामी विवेकानंद की शिक्षाओं को आगे रखकर हम भारत में शिक्षा की ऐसी लहर चलाएँ, जो शहर–शहर, गाँव–गाँव और घर–घर को महका दे, नए रूप में भारत को उसकी पुरानी गरिमा को दिलाने का प्रयास करें और एक बार फिर दुनिया भारत को जगद्गुरु के रूप में जाने। शिक्षा से बुद्धि का, बुद्धि से मनुष्य का और मनुष्य से समाज का विकास होता है। इस क्रम में स्वामी विवेकानंद की शिक्षा से समृद्ध यह शोध होने के साथ ही उनकी शिक्षा को सरल शब्दों में जन–जन तक पहुँचाती है।

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/4.6.2023:720-724

दर्शन के लिए अंग्रेजी में प्रयुक्त फिलॉसफी (Philosophy) शब्द दो ग्रीक शब्दों से मिलकर बना है –Philos + Sophia, Philos का अर्थ है – Love (प्रेम) और Sophia का अर्थ है– Knowledge (ज्ञान)। इस प्रकार फिलॉसफी का अर्थ है Love of Knowledge अर्थात् ज्ञान के प्रति प्रेम। व्यक्ति जिस विश्व में रहता है, उसके विषय में अनेक प्रश्न उनके मस्तिष्क में उठते हैं – जैसे जीवन क्या है ? इसका अंतिम लक्ष्य क्या है ? सत्य क्या है ? विश्व क्या है ? इसकी उत्पत्ति कैसे हुई ? इसकी नियामक शक्ति क्या है ? आदि। दर्शन ज्ञान की वह शाखा है जिसमें तार्किक ढ़ंग से गहन चिंतन एवं मनन के पश्चात् इन प्रश्नों का उत्तर जानने एवं उसके आधार पर एक सही जीवन दर्शन निर्धारित करने का प्रयास किया जाता है।

डम्बिल के अनुसार, ''व्यापक अर्थ में शिक्षा में वे सभी अनुभव सम्मिलित हैं, जो व्यक्ति को जन्म से लेकर मृत्यु तक प्रभावित करते हैं।''

रसल के अनुसार, ''अन्य सभी अध्ययनों की भाँति दर्शन शास्त्री का उद्देश्य मुख्य रूप से ज्ञान की प्राप्ति है।''

डॉ० राधाकृष्णन के अनुसार, ''दर्शन वास्तविकता के स्वरूप की तर्कसंगत खोज है।''

''शिक्षा दर्शन एक दार्शनिक प्रक्रिया है, जिसके अन्तर्गत हम शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं पर दार्शनिक विधियों एवं दृष्टिकोणों से विचार कर सकते हैं जिससे इस सन्दर्भ में, हम किन्हीं निश्चित परिणामों तक पहुँच सकें।''

शोध समस्या का औचित्य

स्वामी विवेकानन्द ने अपने अल्पकालीन जीवन में मानव कल्याण के लिए जो आध्यात्मवाद तथा भारतीय दर्शन के मौलिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया वह संसार के इतिहास में सर्वदा स्मरणीय रहेगा। उनका मुख्य मिशन था, मानव निर्माण और इसके लिए उन्होंने शिक्षा को रामबाण बताया था। उनका शैक्षिक दर्शन क्या था ? उन्होंने शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, विधियों, स्त्रीशिक्षा, धर्मशिक्षा आदि के बारे में क्या विचार प्रस्तुत किये थे। ये सब जानना आधुनिक समय में और भी जरूरी हो गया है क्योंकि उनका शैक्षिक दर्शन न केवल तत्कालीन समय में बल्कि वर्तमान परिस्थितियों में भी तर्क संगत है। स्वामीजी का शैक्षिक दर्शन भविष्य में शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। शोधकर्त्ता ने यह विषय इसलिए चुना है कि यह विद्यार्थीगण तथा अध्यापक के साथ–साथ समाज और राष्ट्र को भी समुचित लाभ प्रदान करेगा।

समस्या कथन

''स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शन एवं उनके शैक्षिक विचारों का भारतीय शिक्षा प्रणाली में योगदान।''

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण

शैक्षिक दर्शन

जीव जगत् में मनुष्य का विशिष्ट स्थान होने का कारण उसकी बुद्धि है। बौद्धिक विकास हेतु शिक्षा आवश्यक है। शिक्षा ही वह उपादान है, जो मनुष्य के बौद्धिक स्तर को बढ़ाकर उसके जीवन को सुखद बनाता है। शिक्षा बिना मानव जीवन पंगु है। ''शैक्षिक दर्शन'' में कहा गया है, कि ''कारण गुणपूर्वकः कार्य गुणोदृष्टः'' अर्थात् उपादान कारण के गुणानुसार कार्य में गुण विद्यमान होते हैं। जैसे घड़े के उपादान मिट्टी के कारण गुणानुसार मिट्टी में गुण विद्यमान हैं, ठीक उसी प्रकार जिस मनुष्य के पास जैसी शिक्षा होगी, उसकी बुद्धि वैसी ही होगी। शिक्षा द्वारा मनुष्य अपना विकास तो करता ही है, साथ में समाज का विकास भी विवेकवान मनुष्य द्वारा ही होता है। वस्तुतः जीवन और शिक्षा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। शिक्षा जीवन–पर्यंत चलनेवाली प्रक्रिया है। आदमी जन्म से लेकर मृत्यु–शय्या तक शिक्षा ग्रहण करता रहता है। अलग–अलग विद्वानों ने शिक्षा के अलग–अलग विभाग किए हैं, किंतु प्रमुखतः शिक्षा दो तरह की हो सकती है–एक तो औपचारिक, जो कि एक पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार निर्धारित पाठ्यक्रम और निर्धारित समय–सीमा के अंतर्गत दी जाती है, तथा दूसरी अनौपचारिक शिक्षा, जिसे व्यक्ति कहीं भी, किसी से भी, कभी भी ग्रहण कर सकता है। जैसे कि एक कहानी में एक पराजित राजा ने मकड़ी से शिक्षा ग्रहण की और अंततः विजयी हुआ।

ये जो बड़े–बड़े ग्रंथ हैं, जिन्हें बड़े–बड़े विद्वानों ने लिखा है–ये भी अनुभवों का संकलन मात्र हैं, जिसका हस्तांतरण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में शिक्षा के माध्यम से होता है। इन ग्रंथों का प्रयोजन यही होता है, कि हमारी आनेवाली पीढ़ी को वे दुःख न सहने पड़ें, जो कि अज्ञानतावश उन्होंने सहे हैं। वर्तमान में यदि हम अपना अवलोकन करें तो हमारी मानसिकता ऐसी हो गई है, जिसमें हम पुराने अनुभवों से सीख न लेकर उस विषय पर स्वयं प्रयोग करके सीखने का प्रयास करते हैं। यह अच्छी बात है, किंतु इसकी हानि भी बहुत है। इसका सबसे बड़ा नुकसान यह होता है, कि इसमें एक तो हमारा कीमती समय बरबाद होता है, साथ–ही–साथ कभी–कभी हम केवल प्रयोग के उपकरण मात्र बनकर रह जाते हैं, या कभी–कभी ऐसा भी हो जाता है, कि हम एक प्रायोगिक श्रृंखला के सदस्य बन जाने के कारण प्रयोग के बाद अगले प्रयोग में फँसते जाते हैं और अपने जीवन को नष्ट कर देते हैं। इतना सबकुछ जानने के बाद भी, हम स्वयं प्रयोग करने में ही ज्यादा आस्था रखते हैं। किसी भी व्यक्ति या समाज की उन्नति का मूल शिक्षा है। शिक्षा के प्रभाव से मनुष्य में शिष्टाचार, सदाचार, समाज का ज्ञान इत्यादि गुण उत्पन्न होते हैं।

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/4.6.2023:720-724

वर्तमान समय में भारत की शिक्षा शैली में कोई–न–कोई कमी अवश्य है। यही कारण है, कि जगद्गुरु कहलाने वाले भारत में आज शिक्षा की दशा शोचनीय है। हमें चाहिए कि हम भारत में शिक्षा की ऐसी लहर चलाएँ, जो शहर–शहर, गाँव–गाँव और घर–घर को महका दे और एक बार पुनः दुनिया भारत को, उसके पुराने रूप जगद्गुरु से जाने। हम जगद्गुरु की उपाधि से पुनः भारत को गौरवान्वित करें, नए रूप में भारत को उसकी पुरानी गरिमा को दिलाने का प्रयास करें। शिक्षा से बुद्धि का, बुद्धि से मनुष्य का और मनुष्य से समाज का विकास होना अटल सत्य है। इस क्रम में स्वामी विवेकानंद की शिक्षा से समृद्ध यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध हो सकती है। यही इस पुस्तक के सृजन का मूल उद्देश्य है–शिक्षा द्वारा मानव का सांस्कारिक विकास और देश का कायाकल्पीकरण।

शैक्षिक विचार

भारत की वर्तमान और भविष्य में आने वाली परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुये, हमें अपनी वर्तमान शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण परिवर्तन करने की अति आवश्यकता है, हमें ऐसी वर्तमान शिक्षा की आवश्यकता है, जो समय के अनुकूल हो, हमारी दुर्दशा का मूल कारण, नकारात्मक शिक्षा प्रणाली है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली केवल क्लर्क पैदा करने की मशीनरी मात्र है, यदि केवल यह इसी प्रकार की होती है, तो भी मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ। इस दूषित शिक्षा प्रणाली के माध्यम से, शिक्षित भारतीय युवा पिता, पूर्वजों, इतिहास एवं अपनी संस्कृति से घृणा करना सीखता है, वह अपने पवित्र वेदों, पवित्र गीता को झूठा समझने लगता है, इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली के द्वारा तैयार हुए, युवा अपने अतीत, अपनी संस्कृति पर गौरव करने के बदले इन सब से घृणा करने लगता है और विदेशियों की नकल करने में ही गौरव की अनुभूति करता है, इस शिक्षा प्रणाली के द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में कोई भी सहयोग प्राप्त नहीं हो रहा है। ज्ञान व्यक्ति अपने भीतर निहित है। व्यक्ति अपने भीतर यह अनुभव से, इस ज्ञान को पता चल गया। पूर्णता हर किसी में निहित है। यह पूर्णता के लिए एक का नेतृत्व करने के लिए शिक्षा का समारोह है। इसलिए, शिक्षा सभी के लिए उपलब्ध कराया जाना चाहिए। स्वामी विवेकानंद यह है, कि हम एक बच्चे के विकास को बढ़ावा देने के लिए लगता है, कि गलत है, कि कहते हैं। वास्तव में, वह अपने विकास खुद को आगे, उन्होंने कहा, कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वयं के स्वभाव के अनुसार विकसित करता है, कहते हैं। समय आता है, जब हर किसी को इस सच्चाई का पता चल जाएगा। यदि आप एक बच्चे को शिक्षित कर सकते हैं लगता है? बच्चे खुद को शिक्षित करना होगा, अपने काम उसे करने के लिए आवश्यक अवसर प्रदान करते हैं और उसके रास्ते में बाधाओं को दूर करने के लिए है। वह अपने दम पर खुद को शिक्षित करना होगा। एक पौधे से ही बढ़ता है, माली इसे विकसित करता है? वह सिर्फ यह अपने आप बढ़ती करता है, कि संयंत्र ही है, यह करने के लिए आवश्यक वातावरण प्रदान करता है। इस प्रकार स्वामी विवेकानंद स्वाध्याय के सिद्धांत की वकालत शिक्षा उपयोगी बनाने के क्रम में, यह बच्चे के स्वभाव और जरूरत के हिसाब से होना चाहिए। यह शिक्षक, या उसकी जरूरत है, और प्रकृति का निर्धारण करेगा जो माता – पिता नहीं है। उनकी शिक्षा इन प्रवृत्तियों की तर्ज पर नमूनों की जानी चाहिए। शिक्षक प्रत्येक बच्चे की आत्मा में भगवान कल्पना करने के लिए है। प्रत्येक बच्चे को भगवान की अभिव्यक्ति के रूप में माना जाना चाहिए। वास्तव में, हम भगवान की सेवा करना है। इसलिए हम प्रत्येक बच्चे की सेवा के लिए है। ज्ञान के अधिग्रहण के लिए, एकाग्रता या ध्यान बहुत जरूरी है। जीवन में सफलता के लिए भी, इस शक्ति बहुत उपयोगी है। हर कोई एकाग्रता से ही बिजली नहीं है। इस शक्ति की मदद के साथ एक उपयोगी ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, और उपयोग जब भी आवश्यक है, के लिए मन में यह व्यवस्था है।

शोध सें उभरने वाले प्रश्न

- शिक्षा का दार्शनिक आधार क्या है ?
- शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियाँ क्या–क्या हैं ?
- अध्यापकों एवं छात्रों का शिक्षा में योगदान क्या है ?
- शिक्षा में विद्यालय प्रशासन एवं अनुशासन का क्या योगदान है ?
- स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन का वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली पर क्या प्रभाव पड़ा है ?
- स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा में क्या योगदान है ?
- स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन क्या है ?
- स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचार क्या है ?
- स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य क्या है ?
- स्वामी विवेकानन्द के अनुशासन सम्बन्धी विचार क्या है ?

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/4.6.2023:720-724

स्वामी विवेकानन्द की धार्मिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा एवं मूल्य शिक्षा क्या है ?

शोध के उद्देश्य

- स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक दर्शन को जानना।
- स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक दर्शन का भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में योगदान को जानना।
- स्वामीजी के अनुसार दर्शन का शिक्षा पर प्रभाव को जानना।
- स्वामीजी के अनुसार शिक्षा पर दर्शन का प्रभाव को जानना।
- स्वामीजी के शिक्षा के विभिन्न अंगों पर दर्शन के प्रभाव को जानना।
- शिक्षा प्रक्रिया में दर्शन एवं छात्रों के योगदान को जानना।
- शिक्षा प्रक्रिया में दर्शन एवं अध्यापक के योगदान को जानना।

शोध विधि

स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शन एवं उनके शैक्षिक विचारों का भारतीय शिक्षा प्रणाली में योगदान के लिए निम्न शोध विधि प्रयोग में ली जाऐंगी।

- दार्शनिक विधि द्वारा लघु शोध प्रबन्ध का कार्य पूरा किया जायेगा।
- पुस्तकालय कार्य किया जायेगा, जिसमें निम्नलिखित पुस्तकालयों में उपलब्ध पुस्तकों का अध्ययन किया जायेगा :–
- एम.बी.एम.एल. कॉलेज ऑफ एजूकेशन का पुस्तकालय।
- गुरूग्राम जिले के सार्वजनिक पुस्तकालय।
- Department of Education Library, Delhi, University, (Delhi).
- महान शिक्षा शास्त्रियों के विचारों का शिक्षा में योगदान का अध्ययन करना।
- महान दार्शनिकों के विचारों का शिक्षा में योगदान का अध्ययन करना।
- शिक्षा एवं दर्शन के सम्बन्धों का अध्ययन करना।
- दर्शन में प्रयुक्त शिक्षण विधियों का प्रयोग करना।
- दर्शन एवं अध्यापक तथा दर्शन एवं छात्र के सम्बन्धों का अध्ययन करना।
- दर्शन एवं विद्यालय प्रशासन का अध्ययन करना।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में शिक्षा एवं दर्शन तथा उनके शैक्षिक विचारों का भारतीय शिक्षा प्रणाली में योगदान के लिए निम्न शोध उपकरण प्रयोग में लिये जायेंगें :–

- दर्शन पर शिक्षा का प्रभाव।
- शिक्षा पर दर्शन का प्रभाव।
- महान शिक्षा शास्त्री एवं दार्शनिकों के विचार।
- शिक्षा के विभिन्न अंगों पर दर्शन का प्रभाव।
- दर्शन एवं शिक्षण विधियाँ।
- दर्शन एवं पाठ्य पुस्तकें।
- दर्शन और अनुशासन।

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/4.6.2023:720-724

- दर्शन का अध्यापकों एवं छात्रों पर प्रभाव।
- दर्शन एवं विद्यालय प्रशासन।
- स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक विचार।
- स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन।
- विवेकानन्द का भारतीय शिक्षा प्रणाली पर प्रभाव। परिसीमन

स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शन एवं उनके शैक्षिक विचारों का भारतीय शिक्षा प्रणाली में योगदान के परिसीमन के लिए स्वामीजी के दार्शनिक विचारों के वेदान्त दर्शन, ईश्वर (ब्रह्म), जगत, मानव एवं सत्य (ज्ञान) का उल्लेख करते हुए, उनके शिक्षा दर्शन के आधारभूत सिद्धान्तों एवं विभिन्न प्रकार की शिक्षा में जन–शिक्षा, स्त्री–शिक्षा, धर्म–शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा आदि का उल्लेख किया जाऐगा तथा शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम एवं शिक्षा की विधियाँ एवं शिक्षक एवं विद्यार्थी का विद्यालय में अनुशासन संबंधी विचारों का उल्लेख करते हुए स्वामीजी के शिक्षा दर्शन का वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली में प्रभाव का योगदान एवं नैतिक मूल्य शारीरिक एवं मानसिक तथा कलात्मक विकास तथा राष्ट्रीय शिक्षा एवं धार्मिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा एवं मातृभाषा की शिक्षा आदि को परिसीमन के रूप में प्रयुक्त किया जाऐगा।

वित्तीय सहायता और प्रयोजन : शून्य

हितों का टकराव : हितों का कोई टकराव नहीं है

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अरोड़ा, वी.के. (1968) ''दा सोशियल एण्ड पोलिटिकल फिलॉस्फी ऑफ स्वामी विवेकानन्द'', पौथी पुस्तक, कलकत्ता।
2. शर्मा, जी. रणजीत (1987), ''दा आईडियालिस्ट फिलॉस्फी ऑफ स्वामी विवेकानन्द'', अटलांटिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली ।
3. स्वामी रामदेव, ''योग साधना व योग चिकित्सा रहस्य'' ,दिव्य प्रकाशन, हरिद्वार।
4. अहलूवालिया, बी.के. (1983),''विवेकानन्द एण्ड इण्डियन रिनायेन्स'', एसोसिएटेड पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली।
5. श्रीमती मधु जोशी ''योग–आसन, प्राणायाम, मुद्राएँ और क्रियाएँ'', विवेकानन्द केन्द्र, तमिलनाडू।
6. यहूदियों का एक पूर्वपुरूष,
7. शिव गजरानी (2013), ''आधुनिक भारत का इतिहास'', विश्वकोष, वोल्युम् – 3 ।
8. ग्रोवर, वीरेन्द्र (1994), ''स्वामी विवेकानन्द पॉलिटिकल थिंकर ऑफ मॉर्डर्न इण्डिया'', दीप एण्ड दीप पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली ।
9. बाखेल, एस.डब्ल्यू. (2001), ''हिन्दुज्म : नेचर एण्ड डवलपमेन्ट'', स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा०लि०,
10. योगेश्वरानन्द, ''दी लाइफ ऑफ स्वामी विवेकानन्द'',
11. स्वामी विवेकानन्द, ''प्रेक्टिकल वेदान्त'' ।
12. ''दा कम्पलीट वर्क्स ऑफ स्वामी विवेकानन्द'', खण्ड–3 ।